निबंध लेखन

निबंध लेखन एक कला है। निबंध का शाब्दिक अर्थ होता है 'सुगठित अथवा 'सुव्यवस्थित रूप में बँधा हुआ'। साधारण गद्य रचना की अपेक्षा निबंध में रोचकता और सजीवता पाई जाती है। निबंध गद्य में लिखी हुई रचना होती है, जिसका आकार सीमित होता है। उसमें किसी विषय का प्रतिपादन अधिक स्वतंत्रतापूर्वक और विशेष अपनेपन और सजीवता के साथ किया जाता है। एकसूत्रता, व्यक्तित्व का प्रतिबिंब, आत्मीयता, कलात्मकता निबंध के तत्त्व माने जाते हैं। इन तत्त्वों के आधार पर निबंध की रचना की जाती है।

निबंध लिखते समय निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दें :

• प्रारंभ, विषय विस्तार, समापन इस क्रम से निबंध लेखन करें। • विषयानुरूप भाषा का प्रयोग करें। • भाषा प्रवाही, रोचक और मुहावरेदार हो। • कहावतों, सुवचनों का यथास्थान प्रयोग करें। • शुद्ध, सुवाच्य और मानक वर्तनी के अनुसार निबंध लेखन आवश्यक है। • सहज, स्वाभाविक और स्वतंत्र शैली में निबंध की रचना हो। • विचार स्पष्ट तथा क्रमबद्ध होने आवश्यक हैं। • निबंध की रचना करते समय शब्द चयन, वाक्य-विन्यास की ओर ध्यान आवश्यक देना है। • निबंध लेखन में विषय को प्रतिपादित करने की पद्धति के साथ ही कम-से-कम चार अनुच्छेदों की रचना हो। • निबंध का प्रारंभ आकर्षक और जिज्ञासावर्धक हो। • निबंध के मध्यभाग में विषय का प्रतिपादन हो। निबंध का मध्यभाग महत्त्वपूर्ण होता है इसलिए उसमें नीरसता न हो। • निबंध का समापन विषय से संबंधित, सुसंगत, उचित, सार्थक विचार तक ले जाने वाला हो।

2. वैचारिक निबंध :

वैचारिक निबंध लिखते समय आवश्यक बातें :

• वैचारिक निबंध लेखन में विषय से संबंधित विचारों को प्रधानता दी जाती है। • वर्णन, कथन, कल्पना से बढ़कर विचार महत्त्वपूर्ण होते हैं। • विचार के पक्ष-विपक्ष में लिखना आवश्यक होता है। • विषय के संबंध में विचार, मुद्दे, मतों की तार्किक प्रस्तुति महत्त्वपूर्ण होती है। • पूरक पठन, शब्दसंपदा, विचारों की संपन्नता जितनी अधिक होती है उतना ही वैचारिक निबंध लिखना हमारे लिए सहज होता है।

1. आदर्श छात्र/छात्रा
2. मोबाईल से लाभ-हानि
3. भ्रष्टाचार
4. 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'
5. पर्यावरण संतुलन
6. जल है तो कल है
7. संदेश वहन के आधुनिक साधनों से लाभ-हानि
8. विश्वबंधुता वर्तमान युग की माँग